शब्दशक्ति

हम दैनंदिन व्यवहार में विचारों के आदान-प्रदान के लिए जो साधन प्रयोग में लाते है उसे भाषा कहते है। भाषा में शब्द और अर्थ का बिलकुल निकट का संबंध रहता है । इतना कि शब्द और अर्थ को हम एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते। अतः इस शब्द और अर्थ के संबंध को समझने के लिए वैयाकारो ने और काव्यशास्त्रीयोने विभिन्न मत प्रकट किए है।

शब्द की शक्ति असीम है। शब्द उच्चारण का ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है। अचार या चटनी का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आता है । भूत या साँप का उच्चारण करते ही मन में भय का संचार होता है। यह प्रभाव अर्थगत है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का यह प्रभाव अर्थगत पड़ता है। वही शब्दशक्ति कहलाती है ।

परिभाषाएँ

1] शब्द और अर्थ के समन्वय को स्पष्ट करने वाले तत्व को शब्दशक्ति कहते हैं । अर्थात शब्द का अर्थबोध करानेवाला तत्व ही शब्दशक्ति है।

2] आचार्य चिंतामणि **:--** हिंदी के रीतिकाल के आचार्य चिंतामणि ने लिखा है कि
"जो सुन पड़े सो शब्द है,समुझि परै सो अर्थ ।"
अर्थात "जो सुनाई पड़े वह शब्द है तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ है।"

शब्द और अर्थ का परस्पर अटूट संबंध है। जिस प्रकार जल के बिना लहर की और लहर के बिना जल की कल्पना नहीं की जा सकती | उसी प्रकार शब्द विहिन अर्थ और अर्थ विहिन शब्द का अस्तित्व ही नहीं हो सकता काव्य में कवि अपने भाव जिन शब्दों में प्रस्तुत करता है, उन्ही शब्दों में अर्थ भरा हुआ होता है । उसी अर्थपर ही काव्य की श्रेष्ठता निर्भर रहती है। इसलिए काव्यशास्त्रियॉने शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दशक्ति की खोज की है। जितने प्रकार के शब्द होंगे उतनी ही प्रकार की शब्दशक्तियाँ होगी।
शब्द वाचक, लक्षक और व्यंजक तीन प्रकार के होते है।
तथा इन्ही के अनुरूप ही तीन प्रकार के अर्थ- वाच्यार्थ, लक्षार्थ व्यंग्यार्थ होते है । शब्द और अर्थ के अनुरूप ही शब्द की तीन शक्तियाँ अभिधा, लक्षणा, व्यंजना होती है। कुमरिल भट्ट 'तात्पर्या' नमक एक चौथी शब्दशक्ति मानते है।

★ अभिधा **:--** "साक्षात सांकेतिक अर्थ को बतलानेवाली शब्द की प्रथम शक्ति को अभिधा शक्ति कहते है।"
वह शब्द वाचक कहलाता है। मुख्य या प्रथम अर्थ की बोधक होने के कारण अभिधा शक्ति को मुख्य या अग्रिमा भी कहते है। लोक व्यवहार में बिना संकेतग्रह के शब्द के अर्थ की प्रतीति नहीं होती इसलिए संकेत के सहायता से ही शब्द अर्थ विशेष प्रतिपादित होता है। अर्थात जहाँ संकेत मिलता है वह शब्द उस अर्थ का वाचक है उदा. 'यह हमारा घर है।'
यह वाक्य पढ़ते ही उसमें जो 'घर' शब्द है उससे संकेत गृह है। अर्थात रहने का स्थान अर्थात घर है। यह अर्थ अभिधा शक्ति के मुख्यार्थ के संबंध को स्पष्ट करता है।
अभिधा शक्ति से जिन वाचक शब्दों का अर्थबोध होता है वे तीन प्रकार के है।
1] रूढ़ि
2] यौगिक
3] योगरूढ़ि

1] रुढि / रूढ **:--** रुढि या रूढ शब्द वे है जिनकी व्युत्पत्ति नहीं की जा सकती। जो समुदाय के रूप में अर्थ की प्रतीति कराते है।
जैसे- पेड़, पशु, घर आदि ।

ये शब्द अखंड शक्ति से अर्थ बताते है। इनके अर्थ भी निश्चित होते है।

2] यौगिक :-- यौगिक वे शब्द होते है जिनकी व्युत्पत्ति हो सकती है। इन शब्दों का अर्थ रूढ के अवयवों से मालूम होता है। जैसे- भूपति, नरपति, सुधांशु
भूपति शब्द भू + पति से निर्मित है। 'भू' का अर्थ पृथ्वी है और पति का अर्थ 'स्वामी'। इन दोनों के मिलने से पृथ्वी का स्वामी अर्थ होता है। इसी प्रकार अन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की जा सकती है।
उदा. – हलधर= हल + घर= हल को धारण करनेवाला
3] योगरूढि :-- योगरूढि शब्द वे होते है जो योगिक होते है। लेकिन उनका अर्थ रूढ होता है।
जैसे:-- 'पंकज' = पंकज शब्द की व्युत्पत्ति करने पर 'पंक' + 'ज' रूप बनता है । यौगिक अर्थ है 'पंक' से जन्म लेनेवाला' पंक (कीचड) से जन्म लेने वाले पदार्थों में सेवार, घोंघा कमल आदि है। किंतु यह शब्द केवल कमल के अर्थ में रूढ हो गया है। उसी प्रकार जलज' शब्द है या गणनायक शब्द है। 'गणनायक' शब्द गणेश का बोधक है। सेनानायक का नहीं। अतः यह योगरूढ शब्द है।

★ **लक्षणा :--** जिस शक्ति के सहारे शब्द के मुख्यार्य को छोड़कर उससे संबंध रखने वाले किसी अन्य अर्थ का बोध हो जाता है उस शक्ति को लक्षणा शक्ति कहते है। लक्षणा शक्ति के कुछ तत्व होते है। यह तत्त्व या शर्ते उपस्थित ना हो तो लक्षणा शब्दशक्ति की प्रतीति नहीं मिलेगी। ये शर्ते इस प्रकार है—

1] मुख्यार्थ का बोध **[** ज्ञान होना **]**
2] मुख्यार्य में बाधा **[** रुकावट होना **]**
3] मुखार्थ का आरोपित अर्थ के साथ संबंध होना
4] रूढ़ि / प्रयोजन = विशेष प्रकार से कहने का ढंग

इन शर्तों के आधार पर निम्नलिखित उदाहरण देखा जा सकता है।
उदा. - "आज हमारा घर मेला देखने गया है।"
इस वाक्य में मुख्यार्थ का बोध तभी हो जाता है जब यह बाधा उपस्थित हो जाती है कि घर तो जड़ पदार्थ है, फिर वह मेला देखने जा ही नहीं सकता अतः उससे संबंधित अर्थ 'घर के अंदर रहने वाले सदस्य' यह मिलता है। इस प्रकार उपर्युक्त समय का अर्थ यह हुआ कि "आज हमारे घर के सभी सदस्य मेला देखने गए है।"
उदा-- 'आजकल आप तो ईद का चाँद हो गए है।"
इस वाक्य में भी 'ईद का चाँद' कोई व्यक्ति कैसे हो सकता है? चाँद मुख्यार्थ समझने के बाद बाधा उपस्थित हो गई है। इस लक्षार्थ का संबंध इस प्रकार स्थापित होता है कि ईद का चाँद भी बड़ी मुश्किल से नजर आता है। इसी प्रकार कई दिनों के बाद जिसका दर्शन हो गया है, वह 'ईद का चाँद' है।

लक्षणा शब्दशक्ति में पहले तो मुख्यार्थ का बोध होना आवश्यक है। दूसरे उस मुख्यार्थ में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित होना जरूरी है। तीसरे किसी रूढ़ि या प्रयोजन के कारण लक्षार्थ तथा वाच्यार्थ का संबंध होना जरूरी है। मुख्यार्थ के संबंधित अन्य अर्थ लक्षणा शब्दशक्ति में महत्वपूर्ण होती है ।
अन्य उदाहरण –

- तुम पूरे गधे हो।
- मेरा कुत्ता शेर का चाचा है।
- 'लहरें व्योम चूमती उठती ।'

लक्षणा के भेदों के संबंध में विद्वानों में काफी मतभेद है। फिर भी निम्नलिखित भेद अधिक प्रसिद्ध है --

- शुद्धा लक्षणा
- उपादान लक्षणा
- लक्षण लक्षणा
- सारोपा लक्षणा
- साध्यवसाना लक्षणा
- गौणी लक्षणा

★ **व्यंजना :--** शब्दशक्तियों में तिसरी शब्दशक्ति 'व्यंजना' है। व्यंजना शब्द की व्युत्पत्ति 'वि'+'अंजना' इन दो शब्दों से हुई है। 'वि' उपसर्ग है तथा 'अंज' धातु है। व्यंजना का अर्थ है- 'विशेष प्रकार का अंजन'| अंजन लगाने से नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है। किंतु विशेष प्रकार के अंजन लगाने से न दिखाई देने वाली वस्तु भी दिखाई देती है। व्यंजना के द्वारा इसी प्रकार के अर्थ स्पष्ट होते है। जब अभिधा और लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है तब व्यंजनाशक्ति काव्य में छिपे हुए गूढ सौंदर्य को प्रकट करती है। अर्थात कुछ " ऐसे अर्थ होते है जिनकी प्रतीति अभिधा एवं लक्षणा के द्वारा नहीं होती। इस स्थिति में एक तिसरी शक्ति की आवश्यकता महसूस होती है। अभिधा एवं लक्षणा शक्तियों के अपना-अपना कार्य कर शांत हो जाने पर जिस शक्ति के द्वारा अर्थ का ज्ञान होता है उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहते हैं।

व्यंजना का उदाहरण हम निम्नानुसार देख सकते है - " गंगा में गाँव है।" इस उदाहरण को लिया जा सकता है। गंगा में गाँव कभी हो नहीं सकता। अतः लक्षणा का यह अर्थ निकला कि 'गंगा के तटपर गाँव है।" कोई शक्ति इससे से अधिक अर्थ व्यक्त नहीं कर सकती। अतः यहाँ कवि का अभिप्राय है कि गांव की पवित्रता एवं शीलता। यह भावना व्यक्त करने के लिए तिसरी शाक्त की आवश्यकता पड़ती है। यह तिसरा अर्थ व्यंजना शब्द शक्ति द्वारा प्रकट होता है।

इस प्रकार' गंगा में गांव है।' इस उदाहरण में शैल्य और पावनत्व भाव की प्रतीति व्यंजना शब्दशक्ति से होती है।

'बत्तियाँ सब गुल हो चुकी है।'

यदि समय निश्चित करके किसी के घर जाकर देखे तो लक्षणा से यह अर्थ निकलता है की सब सो गए। मालूम है लेकिन व्यंग्यार्थ यह निकलता है कि मालूम था हम आनेवाले है फिर भी इंतजार नहीं किया | इनको हमारी कुछ परवाह नहीं है।

व्यंजना व्यंजना दो प्रकार की होती है –

- ❖ शाब्दी व्यंजना
- ❖ आर्थी व्यंजना

उदा. व्यंजना - 'सूर्य अस्त हुआ।' इसका मुख्यार्य हुआ। सूर्य डूब गया, दिन बीत गया। लक्षार्थ हुआ- 'संध्या हो गयी। जब व्यंग्यार्थ प्रयोक्ता या श्रोता की रुचि के अनुसार कई होगें। श्रोता यदि किसान हो तो इसका अर्थ होगा -- 'अब काम खत्म करके घर चलना चाहिए।' चोर हो तो 'अब काम की तैयारी करनी है। अभिसारिका हो तो 'अभिसार कर प्रियतम को मिलने जाने का समय हुआ। नवोढा हो तो 'उनके आने का समय हुआ आदि अर्थ होंगे।